बांध निर्माण के बाद का विस्थापन

भारत डोगरा

बांध-निर्माण के लिए डूब क्षेत्र में रहने वाले सब लोगों को हटाया जाता है यह तो सब जानते हैं, पर इसके बारे में बहुत कम जानकारी है कि कई बांधों में विस्थापन का यह सिलसिला बांध निर्माण के बाद भी जारी रहता है। यह विस्थापन काफी बड़े पैमाने पर हो सकता है।

चीन के एक समाचार पत्र चाइना डेली ने इस वर्ष जनवरी में समाचार प्रकाशित किया था कि जिन लोगों का विस्थापन थ्री गॉर्जेस डैम से पहले ही हो चुका है, उनके अतिरिक्त बांध निर्माण के बाद 3 लाख लोगों का विस्थापन और होगा।

बांध निर्माण के बाद यह विस्थापन इस कारण हो रहा है क्योंकि बांध-निर्माण के अनेक पर्यावरणीय व भूमि अस्थिरता सम्बंधी दुष्परिणाम हुए। वर्ष 2007 में किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला कि नवनिर्मित जलाशय के आसपास के क्षेत्र में 4000 नए स्थानों पर भूअस्थिरता या भूमि सम्बंधी समस्याओं, विशेषकर भूस्खलन की स्थिति उत्पन्न हुई है। इस तरह के खतरे से बचने के लिए 53,000 लोगों का पुनर्वास किया गया। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि नदी किनारे के कटाव व भूस्खलन अगले 20 वर्षों तक जारी रहेंगे।

हाल ही में जब यह लेखक उत्तराखंड में टिहरी बांध के आसपास के क्षेत्र में गया तो वहां भी टिहरी जलाशय के आसपास के क्षेत्र में कितने ही गांववासियों ने बताया कि उनके गांवों की ज़मीन धसक रही है व भूस्खलन बढ़ रहे हैं। गांव की बहुत-सी भूमि धीरे-धीरे या अचानक भी जलाशय में समा सकती है। एक ओर, इससे गंभीर दुर्घटना की संभावना उत्पन्न होती है, वहीं अनेक लोग भूमिहीन भी हो जाते हैं। इस तरह जहां डूब क्षेत्र के हज़ारों परिवारों को बसाने का सिलसिला अभी समाप्त नहीं हुआ है, वहीं अनेक नए परिवारों के विस्थापन की नई समस्या सामने आ रही है। उनके लिए पुनर्वास की कैसी व्यवस्था हो पाएगी, यह एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन रहा है।

इसके अतिरिक्त बांध निर्माण के बाद बहुत से गांव टापूनुमा बन गए हैं। बाहरी दुनिया से उनके संपर्क के पुराने सीधे रास्ते कृत्रिम जलाशय निर्माण के बाद समाप्त हो गए हैं। टेढ़े-मेढ़े व लंबे रास्तों से उन्हें बाहरी दुनिया से संपर्क बनाना पड़ता है जो महंगा भी है व कष्टदायक भी। यहां के लोग अपनी अधिकांश ज़रूरतों के लिए बाहर बाज़ार पर निर्भर हो चुके हैं। लंबे रास्ते से यहां पहुंचने वाली हर वस्तु ज़्यादा महंगी बेची जाती है। महंगाई के इस दौर में इन लोगों को महंगाई की दोहरी मार झेलनी पड़ती है। इन लोगों की समस्याओं पर भी ध्यान देना ज़रूरी है। ***(स्रोत फीचर्स)***